अध्याय-11

सुदूर-प्रदेशों से सम्पर्क

अजय अपने वर्ग में शांत मुद्रा में सोच रहा था, तभी शिक्षक का वर्ग में प्रवेश हुआ। उसने शिक्षक से सवाल किया–'सर' । आपने हमें बताया था कि सम्राट अशोक के बाद उसका साम्राज्य धीरे–धीरे बिखर गया और नये राज्यों का उदय हुआ। जिनमें कुछ की स्थापना विदेशी आक्रमणकारियों ने की। यह विदेशी कौन थे और कहां से आये थे। शिक्षक ने जवाब दिया कि आगे हम उन विदेशियों की चर्चा करेंगे ।

बच्चों ! मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद मगध क्षेत्र में शुंग वंश की स्थापना हुई। जिसका संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था जो अन्तिम मौर्य सम्राट वृहद्रथ का सेनापति था। उसका राज्य अधिक दिनों तक बना नहीं रह सका क्योंकि भारत की सीमा के बाहर से विदेशी सेनाओं के आक्रमण इस काल में होने लगे और कुछ समय बाद इन्हीं विदेशी विजेताओं ने अपनी सत्ता सुदृढ़ कर ली। इन्होंने भारत में स्थायी रूप से रहना शुरू किया और धीरे–धीरे यहाँ की संस्कृति में लीन हो गये। इनमें कुछ प्रमुख वंश इस प्रकार थे।

बैक्ट्रिया के यूनानी शासक :

ये इतिहास में 'इंडोग्रीक' के नाम से विख्यात है । सबसे प्रसिद्ध यूनानी (यवन) शासक मिनान्डर था, जो बौद्ध साहित्य में 'मिलिन्द' के नाम से जाना जाता है । बौद्ध ग्रन्थ 'मिलिन्दपन्ह' में मिनाण्डर का बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ संवाद है। नागसेन के सम्पर्क में आने के बाद मिनाण्डर बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया । इसकी राजधानी साकल (वर्तमान सियालकोट) शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था ।

यूनानी सम्पर्क का भारत पर व्यापक प्रभाव पड़ा। भारत में चिकित्सा, पद्धति, विज्ञान, ज्योतिष विद्या एवं सिक्के बनाने की कला में परिवर्तन आए जबकि धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में

इन नये शासकों पर भारत का प्रभाव पड़ा ।

शक : यवन शासकों के पतन के बाद 'सीथियन' या शक शासकों ने अपनी सत्ता स्थापित की । यह मूलतः मध्य एशिया के निवासी मगर कुछ समय तक इन्होंने उत्तरी भारत के भागों पर शासन किया। ये 'क्षत्रप' कहलाते थे। ये कई शाखाओं में विभक्त थे। इनमें एक महत्वपूर्ण शाखा उज्जैन के क्षत्रपों की थी । रूद्रदामन महत्वपूर्ण एवं प्रसिद्ध राजा था । उसके जूनागढ़ अभिलेख से दक्षिण भारत के सातवाहन एवं कुषाणों के साथ उनके संघर्ष की जानकारी प्राप्त होती है । जूनागढ़ सुदर्शन झील के पुनर्निर्माण के संबंध में पिछले पाठ में आप पढ़ चुके हैं।

कुषाण : विदेशी आक्रमणों की श्रृंखला में कुषाणों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। कुषाण यू–ची कबीला की एक शाखा थे। भारत में इस वंश का प्रथम शासक कुजुल कडफिसस हुआ। उसने काबुल और कश्मीर में अपनी सत्ता स्थापित की। इस वंश का सबसे महान शासक कनिष्क था। उसके समय के कुषाण साम्राज्य के अन्तर्गत अफगानिस्तन, सिन्ध, बैक्ट्रिया, पार्थिया आदि के प्रदेश सम्मिलित थे।
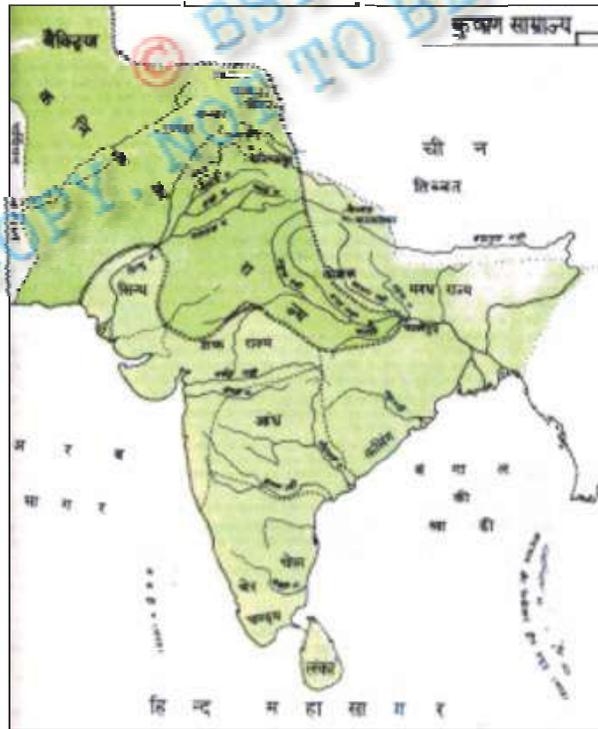
कनिष्क के समय का भारत का मानचित्र

कनिष्क मगध पर आक्रमण कर प्रसिद्ध विद्वान अश्वघोष को अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) ले आया था। भारत के बाहर भी कनिष्क ने अपने साम्राज्य का विस्तार करने के उद्देश्य से कई सैनिक अभियान किए और विशाल भू–भाग को अपने राज्य में मिलाया। इसने चीन के साथ भी युद्ध किया, जहाँ एक बार पराजित होने के बाद दूसरी बार वह विजयी हुआ। मौर्य साम्राज्य के बाद उसने भारत में पहली बार एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। रेशम मार्ग जहाँ से रोम एवं चीन के बीच रेशम का व्यापार होता था पर कुषाण साम्राज्य का नियंत्रण था। इस व्यापारिक मार्ग पर नियंत्रण के कारण भारत का व्यावसायिक सम्पर्क पश्चिम एशिया एवं यूरोप के देशों के साथ हुआ। कनिष्क की राजधानी में बड़े–बड़े विद्वान मौजूद थे। अश्वघोष के अलावे पार्श्व, वसुमित्र, नागार्जुन आदि उसके राजसभा के रत्न थे ।

बौद्धधर्म का विस्तार :

धर्म के क्षेत्र में मौर्योत्तर काल की मुख्य विशेषता थी ब्राह्मण या वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना तथा बौद्ध धर्म की महायान शाखा का उदय और विकास। पुष्यमित्र शुंग ने ब्राह्मण धर्म को बढ़ावा दिया जिससे यज्ञ और बलि की प्रथा का विकास हुआ। इसके साथ ही त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश की धरणा भी बलवती हुई। कई विदेशियों ने भी इस धर्म को अपना लिया। फिर भी भारत में आनेवाले इस समय के लगभग सभी विदेशी शासकों ने बौद्ध धर्म को ही प्रश्रय दिया। हिन्द यूनानी (यवन) शासकों ने अपने सिक्कों पर बौद्ध चिह्न अंकित किए और कुषाणों ने बौद्ध विहारों को बहुत अधिक दान दिए। कनिष्क बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया था। अतः उसने इस धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया। आर्य सुदूर क्षेत्रों में भी बौद्धधर्म के प्रचार के लिए प्रचारक भेजे ।

देश के भीतर बौद्धधर्म को धनी व्यापारियों द्वारा भी प्रश्रय मिला । इस काल के अनेक बौद्ध विहार व्यापारियों के अनुदान से बनाए गए। देश के अधिकांश विहार व्यापारिक मार्गों या पश्चिमी भारत के पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित था ।

व्यापार के माध्यम से बौद्धधर्म पश्चिमी एवं मध्य एशिया भी पहुँचा। व्यापार के ही क्रम में अनेक भारतीय व्यापारियों ने काशगर, खोतान, चारकन्द, तुरफान, मीरन आदि स्थानों पर

व्यापारिक केन्द्रों की स्थापना की। व्यापारियों के साथ बौद्धधर्म के प्रचारक भी इन स्थानों पर गए। मध्य एशिया के निवासियों ने धर्म प्रचारकों के संपर्क से बौद्ध मत ग्रहण किया और बौद्ध मठों की स्थापना की । इन मठों में बौद्ध धर्म ग्रन्थों का अध्ययन प्रारंभ हुआ। विदेशी सम्पर्क ने नये विचारों के विकास में भी सहायता की।

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के तुरन्त बाद ही उनकी शिक्षाओं के संबंध में वाद–विवाद प्रारंभ हो गया था। फलस्वरूप बौद्धधर्म दो शाखाओं में बँट गया–हीनयान और महायान । हीनयान शाखा के अनुयायी महात्मा बुद्ध की मूल शिक्षा में विश्वास करते थे। महायान मत के मानने वाले लोगों ने 'बोधिसत्व' का आदर्श प्रस्तुत किया। इसके अनुसार बुद्ध को एक धर्मिक उपदेशक के रूप में न देखकर भगवान के रूप में देखा जाने लगा । बाद में उनकी मूर्तियां बनाकर उनकी पूजा की जाने लगी। इस प्रकार महायान बौद्धधर्म में भक्ति की अवधारणा का विकास हुआ ।

कला एवं स्थापत्य : मौर्योत्तर काल में कला के विकास में भी उल्लेखनीय प्रगती हुआ। आर्थिक समृद्धि ने भी इस विकास को प्रभावित किया। इस समय के स्थापत्य कला के अवशेष के रूप में स्तूप, गुहा मन्दिर चैत्य एवं बौद्ध विहार (बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान) है । पहाड़ों में चट्टानों को काटकर बनायी गयी गुफाएँ बौद्ध मन्दिरों एवं भिक्षुओं के रहने के लिए प्रयोग की जाती थी । इनमें चैत्य या पूजा स्थल भी शामिल है ।

स्तूप
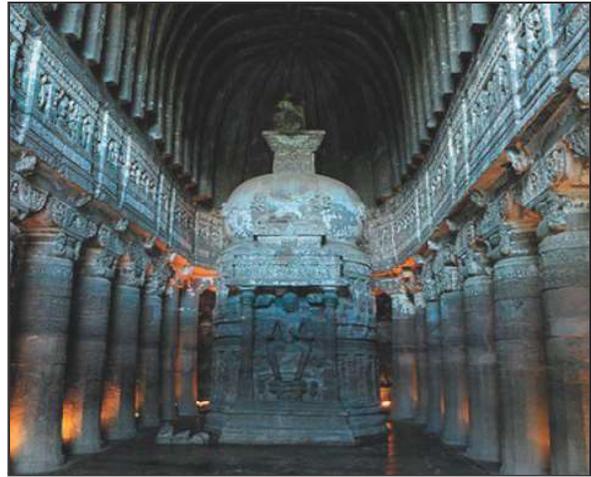
चैत्य

पश्चिमी भारत में कार्ले की गुफाएँ तथा अजंता एवं एलोरा के गुफा मन्दिरों के निर्माण के साक्ष्य आज भी उपलब्ध हैं। भरहुत तथा सांची के स्तूप भी शिल्प कला का अच्छा उदाहरण है। इनमें तोरण और रेलिंग को सजाने के लिए लकड़ी और हाथी दांत का सुन्दर उपयोग हुआ है ।

यह कला धर्म से प्रभावित थी चाहे वह स्थापत्य कला हो अथवा मूर्ति कला। इस समय की कुछ विशिष्ट शैलियां विकसित हुईं। शुंग शैली, गांधर शैली, मथुरा शैली तथा अमरावती शैली में सुन्दर मूर्तियों एवं स्तूपों तथा तोरण द्वारों का निर्माण हुआ ।

शुंग शैली : शुंग कला में स्तूप के चारों ओर एक ऊँची चहारदीवारी बनायी जाती थी तथा चार तोरण द्वार लगाए जाते थे जिसको जातक कथाओं बौद्ध चिह्नों, नाग एवं अप्सरा की मूर्तियां से सजाया जाता था। भारहुत और सांची का स्तूप इस कला का उदाहरण है।

वामियान स्थित भगवान बुद्ध

गांधार शैली : यूनानी कला के प्रभाव से देश के पश्चिमोत्तर प्रदेशों में गान्धार शैली का विकास हुआ । इस शैली की अधिकांश मूर्तियां बुद्ध के जीवन यात्रा से सम्बन्धित है। गान्धार कला की अनेक मूर्तियां लाहौर तथा पेशावर के संग्रहालयों में सुरक्षित हैं । भारत के बाहर इस कला का व्यापक प्रभाव रहा । इस शैली को 'इण्डो-ग्रीक शैली' भी कहा जाता है।

बुद्ध (गांधार शैली)

मथुरा शैली : कुषाण काल में मथुरा भी कला का प्रमुख केन्द्र था । इसमें बुद्ध की मूर्तियां बनाने में स्पष्टतः सोच भारतीय है। इनमें यूनानी

भगवान बुद्ध मथुरा शैली

या ईरानी कला का लक्षण नहीं दिखता है । मथुरा शैली में बुद्ध की मूर्तियां के अलावे हिन्दू एवं जैन मूर्तियों का भी निर्माण किया गया था । मथुरा से कनिष्क की एक सिर रहित मूर्ति मिली है । यह मूर्ति कला की दृष्टि से उच्च कोटि की है । इस शैली में स्थानीय रूप से उपलब्ध सुन्दर लाल बलुआ पत्थर का उपयोग होता था।

अमरावती शैली :

आन्ध्र प्रदेश के अमरावती (गुन्टुर जिला) से बुद्ध की कई मूर्तियां मिली हैं । यहाँ प्राप्त स्तूप की मुख्य विशेषता इसकी संगमरमर की पट्टिकाएँ हैं जिनपर बुद्ध के जीवन से सम्बध दृश्यों का चित्रण किया गया है।

अमरावती स्तूप

इनमें पशुओं और पुष्पों का भी चित्र है । यह कला विदेशी प्रभाव से पूर्ण रूप से मुक्त है ।

इस तरह भारतीय सभ्यता का प्रसार प्राचीन काल में एशिया के विभिन्न देशों में हुआ। इनमें मध्य और दक्षिण पूर्व एशिया के देश शामिल हैं । इन संबंधें का विस्तार धर्मिक और व्यापारिक माध्यमों से हुआ । बौद्धधर्म के प्रचार एवं प्रसार के क्रम में भारत का संबंध श्रीलंका, बर्मा, चीन और मध्य एशिया के साथ बना जबकि व्यापार के माध्यम से कम्बोडिया, इन्डोनेशिया और थाइलैंड आदि देशों के साथ भारत का संबंध स्थापित हुआ ।

श्रीलंका में अशोक के समय में ही बौद्धधर्म का प्रचार हुआ और आज उस देश मे इस धर्म के अनुयायी काफी संख्या में मौजूद हैं। इसी तरह बर्मा या आधुनिक मयाँमार में बौद्ध धर्म के 'थेरवाद' रूप का विकास हुआ। इन दोनों देशों में अनेक मन्दिरों एवं मूर्तियों का निर्माण हुआ जो भारतीय कला के प्रसार का उदाहरण है । कुषाण शासकों के समय अफगानिस्तान

और मध्य एशिया में भी बौद्धधर्म का बड़े पैमाने पर प्रचार हुआ। गौतम बुद्ध की सबसे विशाल मूर्ति अफगानिस्तान के वामयान में ही पहाड़ को काटकर बनायी गयी थी ।
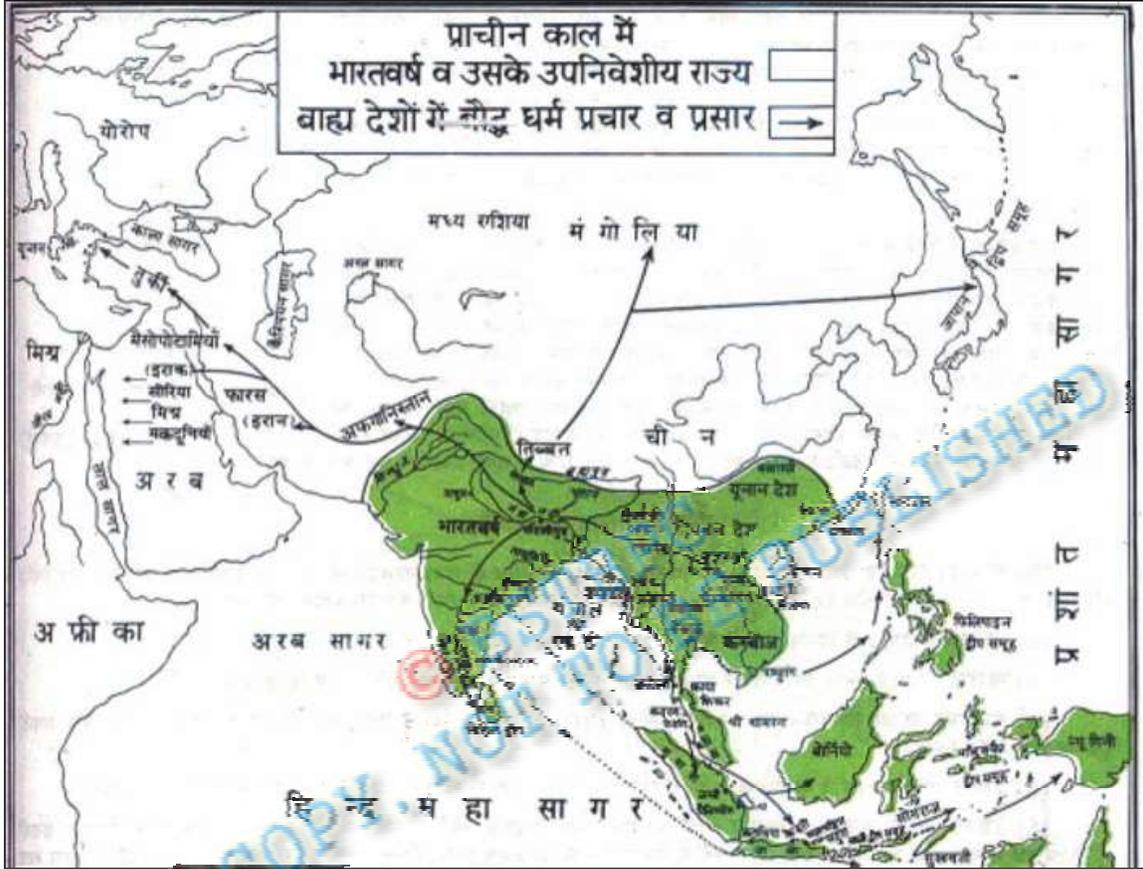
दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का मानचित्र

अभ्यास

आइए याद करें :

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. प्रसिद्ध यूनानी शासक कौन था ?

   (क) कनिष्क (ख) पुष्यमित्र शुंग

   (ग) मीनाण्डर (घ) चन्द्रगुप्त

2. कनिष्क की राजधानी कहाँ थी ?

   (क) काबुल (ख) पेशावर

   ग) अमृतसर (घ) यारकंद

3. शुंग वंश का संस्थापक कौन था ?

   (क) पुष्यमित्र (ख) अग्निमित्र

   ग) वृहद्रथ (घ) यशोवर्मन

II. खाली स्थान को भरें।

1. मौर्यवंश के बाद......................मगध पर शासन किया।
2. इण्डो ग्रीक राजा भारत में......................से आये।
3. सुदर्शन झील की मरम्मत......................ने कराई।
4. ....के सबसे प्रसिद्ध राजा कनिष्क थे।
5. कनिष्क ने......................धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया।

III. सुमेलित करें

महायान	शक
मिनाण्डर	बौद्ध ग्रंथ
रूद्रदामन	सांची
स्तूप	इण्डो ग्रीक
मिलिन्दपन्ह	बौद्ध धर्म

आइए चर्चा करें–

1. मथुरा शैली एवं गंधार शैली के मूर्तिकला में समानता एवं असमानता क्या है?
2. विदेशों में बौद्ध धर्म के प्रसार में किन लोगों का योगदान था?
3. भारत पर यूनानी सम्पर्क का क्या प्रभाव पडा।

आइए करके देखें–

4. बौद्ध धर्म से संबंधित पुस्तकों की सूची बनायें।
5. पुस्तक में दिये गये मूर्तिकला के चित्र देखकर यह बतायें कि वर्तमान समय में बनाये जाने वाले मूर्ति में क्या अंतर देखते हैं?